

भारत का समुद्री व्यापार न केवल प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक देश की आर्थिक और सांस्कृतिक प्रगति का एक महत्वपूर्ण आधार रहा है, बल्कि वैश्विक व्यापार में भी इसका विशेष स्थान रहा है। इसके ऐतिहासिक, मध्यकालीन एवं आधुनिक पहलुओं पर निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से प्रकाश डाला जा सकता है:

1. प्राचीन काल एवं प्रारंभिक इतिहास

प्रारंभिक संपर्क और व्यापार मार्ग:

सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमाणों से पता चलता है कि प्राचीन भारतीय उपमहाद्वीप ने मेसोपोटामिया, अरब, अफ्रीका एवं यूरोप के साथ समुद्री व्यापार स्थापित किया था। भारतीय व्यापारी मसाले, वस्त्र, रत्न, तथा अन्य कीमती वस्तुएँ निर्यात करते थे। इन व्यापारिक गतिविधियों में लोथल, मुजिरिस, तथा तमलिप्ति जैसे बंदरगाह महत्वपूर्ण केंद्र रहे, जहाँ उन्नत जहाज निर्माण तकनीक और मानसून पवनों का उपयोग करके लंबी दूरी की नौवहन यात्राएँ की जाती थीं।

2. मध्यकालीन एवं औपनिवेशिक काल

यूरोपीय आगमन और नियंत्रण:

15वीं शताब्दी के अंत में यूरोपीय शक्तियों, विशेषकर पोर्तूगीज, ने भारत के समुद्री व्यापार पर अपना प्रभुत्व जमाने का प्रयास करना शुरू किया। पोर्तूगीज ने सैन्य बल का प्रयोग करते हुए प्रमुख बंदरगाहों पर कब्जा जमाया और मसाले के व्यापार को नियंत्रित करने के लिए कर एवं इजारेदारी जैसी नीतियाँ अपनाईं। इस दौर में डच और ब्रिटिश जैसी अन्य यूरोपीय शक्तियों ने भी धीरे-धीरे व्यापारिक नियंत्रण के लिए अपने कदम बढ़ाए।

3. स्वतंत्रता पश्चात आधुनिक भारत में समुद्री व्यापार

बन्दरगाह संरचना एवं नीतियाँ:

1947 के बाद से भारतीय सरकार ने समुद्री व्यापार को पुनर्जीवित करने हेतु नीतिगत सुधार किए। आज भारत के पास द्वीपों सहित 7516 किमी लंबी तटरेखा है, जिसमें 13 प्रमुख और लगभग 200 छोटे-बड़े बंदरगाह स्थित हैं। जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट, मुम्बई, चेन्नई, कोचीन आदि प्रमुख बंदरगाह हैं जो देश के निर्यात-आयात (EXIM) व्यापार का बड़ा हिस्सा संभालते हैं।

आधुनिकीकरण एवं सागर माला योजना:

सरकार द्वारा सागर माला जैसी पहलों के अंतर्गत बंदरगाहों का आधुनिकीकरण, रसद ढांचे में सुधार, तथा समुद्री परिवहन के क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा दिया जा रहा है। इस रणनीति से व्यापार की गति बढ़ाने, लागत में कटौती और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भारत की स्थिति मजबूत करने का प्रयास किया जा रहा है।

4. रणनीतिक महत्व और चुनौतियाँ

वैश्विक व्यापार में भूमिका:

आधुनिक भारत का समुद्री व्यापार विश्व के कुल व्यापार में लगभग 68% मूल्य और 95% मात्रा संभालता है, जिससे यह वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण कड़ी बन गया है। भारत का भू-स्थानिक लाभ – हिंद महासागर के केंद्र में स्थित होना – इसे अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए एक प्रमुख गेटवे प्रदान करता है।

चुनौतियाँ:

वैश्विक प्रतिस्पर्धा, समुद्री सुरक्षा, पर्यावरणीय जोखिम एवं पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने जैसी चुनौतियाँ भी सामने आती हैं। साथ ही, तकनीकी नवाचार, जहाज रीसाइक्लिंग और हरित नौवहन के क्षेत्र में सुधार की निरंतर आवश्यकता बनी रहती है।

निष्कर्ष:

भारत का समुद्री व्यापार एक विस्तृत ऐतिहासिक धारा का हिस्सा रहा है। प्राचीन काल में स्थापित व्यापारिक मार्गों से लेकर मध्यकालीन यूरोपीय हस्तक्षेप तक, और आज के आधुनिक औद्योगिक व नीतिगत सुधारों तक – यह व्यापारिक गतिविधि न केवल देश की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है, बल्कि भारतीय संस्कृति, तकनीक एवं वैश्विक संपर्क का प्रतीक भी है। भविष्य में, तकनीकी प्रगति, बेहतर नीतिगत ढांचे और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से भारत अपने समुद्री व्यापार को और भी विस्तारित करने में सक्षम होगा।

इस प्रकार, भारत का समुद्री व्यापार न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से बल्कि वर्तमान में भी आर्थिक, रणनीतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है।